ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/178

# सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

यतीन्द्र मिश्र एवं पवन कुमार

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.290

## सारांश

संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा वर्ष 2015 में सतत् विकास लक्ष्यों को प्रस्तावित किया गया, जिसे वर्ष 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इन लक्ष्यों में अनेक महत्त्वपूर्ण चुनौतियों की पहचान की गयी; जैसे– असमानता, गरीबी, भुखमरी, स्वास्थ्य संबंधी विसंगतियां, पर्यावरणीय ह्रास, शैक्षिक पिछड़ापन, लैंगिक असमानता, सामाजिक अन्याय एवं भेदभाव आदि। चूंकि व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता अपने व्यावसायिक मूल्यों, सिद्धांतों एवं पहचान के साथ सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, सशक्तिकरण एवं समावेशी समाज के निर्माण के लिए समर्पित भाव से कार्य करते हैं, इसलिए जमीनी स्तर पर सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में समाज कार्य व्यवसाय के उपागमों के प्रयोग द्वारा सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने का परीक्षण किया गया है। शोध पत्र में सतत् विकास के प्रथम पाँच लक्ष्यों– गरीबी उन्मूलन, भुखमरी को समाप्त करना, अच्छा स्वास्थ्य एवं खुशहाली, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं लैंगिक समानता को सम्मिलित करते हुए, इन्हें प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इस शोध पत्र में सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों एवं इन्हें प्राप्त करने की रणनीतियों पर व्यापक चर्चा की गयी है।

**मुख्य शब्दः** सतत् विकास, व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता, सामाजिक न्याय, समावेशी विकास, मानवाधिकार।

### प्रस्तावना

सभ्यता के विकास के साथ ही वर्तमान समय में विकास की परिभाषा में परिवर्तन आया है। विकास को विवेकपूर्ण बनाने एवं उसे स्थायी स्वरूप प्रदान करने के लिए सतत् विकास जैसी अवधारणाएं वर्तमान समय की आवश्यकता एवं जरूरत बन गयी हैं। अंधाधुंध विकास किसी भी समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयुक्त नहीं होता है, जब तक कि इसे न्यायसंगत, समावेशी एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से नहीं जोड़ा जाता है। सतत् विकास की अवधारणा संसाधनों के संरक्षण पर बल देती है, जो कि वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूर्ण करते हुए, भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता नहीं करती है। यह अवधारणा संसाधनों के विवेकपूर्ण उपभोग पर केन्द्रित है, ताकि सतत् विकास की परिकल्पना को साकार किया जा सके। इसी के दृष्टिगत वर्ष 2015 में सतत् विकास के लिए एजेंडा 2030 के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र द्वारा कुल 17 सतत् विकास लक्ष्यों को प्रस्तावित किया गया, जिन्हें 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस लक्ष्यों में गरीबी मुक्त, भुखमरी मुक्त, भेदभाव मुक्त, असमानता मुक्त विश्व एवं पर्यावरणीय संरक्षण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता आदि पर ध्यान केन्द्रित किया

- **शोधार्थी : समाज कार्य विभाग, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)**
- **विभागाध्यक्ष एवं सह–आचार्य, समाज कार्य विभाग, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)**

गया है। समाज कार्य व्यवसाय का मुख्य ध्यान सामाजिक विसंगतियों; जैसे गरीबी, भुखमरी, स्वास्थ्य समस्याएं, लैंगिक विषमता, भेदभाव, अशिक्षा आदि समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान पर रहता है, इन्हीं समस्याओं को सतत् विकास लक्ष्यों में भी सम्मिलित करके एक बेहतर समाज के निर्माण की परिकल्पना की गयी है।

समाज कार्य व्यवसाय के अंतर्गत सेवा प्रदान करने की विशेष विधा होती है, जैसे कि अन्य व्यावसायिक विषयों की। एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता परिवार, व्यक्ति, समूह, समुदाय आदि के साथ मिलकर उनके जीवन में आने वाली चुनौतियों की पहचान कर उनका समाधान प्रस्तुत करता है। सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों में भी व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता अपनी सेवाएं प्रदान करके समाज में खुशहाली लाने का प्रयास करता है। एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता सुविधा प्रदाता, एडवोकेट, एजुकेटर, परिवर्तन एजेंट होता है। सतत् विकास लक्ष्य रूपांतरकारी बदलावों, सशक्तिकरण, समावेशाी विकास आदि पर केन्द्रित है, जिनमें व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका, उनके अनुभव एवं जमीनी स्तर पर कार्य करने के तरीके के कारण महत्त्वपूर्ण हो जाती है। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की फील्ड स्तरीय ज्ञान सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में सराहनीय कदम हो सकता है। सतत् विकास के अधिकतर लक्ष्य सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए हैं, जो समाज कार्य व्यवसाय के विशिष्ट क्षेत्र में आते हैं। इनमें कार्य करने का अच्छा अनुभव व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के पास होता है।

**उद्देश्य**

1- सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका।
2- समाज कार्य व्यवसाय एवं सतत् विकास के मध्य संबंधों को समझना।
3- सतत् विकास लक्ष्यों के क्रियान्वयन में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के समक्ष चुनौतियां।
4- व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका को प्रभावकारी बनाने के लिए रणनीतियां।

**परिकल्पना**

1- सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
2- व्यावसायिक समाज कार्य के उपागम सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रभावकारी माध्यम हो सकता है।
3- संसाधनों की कमी व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका को प्रभावकारी बनाने में बाधक है।

**समस्या कथन**

1- व्यावसायिक समाज कार्य विषय का कौन–सा उपागम सतत् विकास में उपयोगी है।
2- सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के समक्ष चुनौतियां।
3- सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्य को प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है?
4- सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं का योगदान कैसे हो सकता है?

## शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। यह आँकड़ें विभिन्न माध्यमों से प्राप्त किये गये हैं; जैसे– समाज कार्य साहित्य, शोध आलेख, शासकीय नीतियां एवं रिपोर्ट, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्ट आदि।

संकलित आँकड़ों का विश्लेषण, सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका के संदर्भ में किया गया है, ताकि यह समझा जा सके कि व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं का योगदान इन लक्ष्यों की प्राप्ति में किस स्तर तक है और वह कौन से उपागम हैं, जिनका प्रयोग करके व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका को सार्थक बनाया जा सकता है। शोध में यह भी बताया गया है कि किन रणनीतियों का पालन करके सतत् विकास लक्ष्यों को अधिक प्रभावकारी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

## सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका

प्रस्तुत शोध में सतत् विकास लक्ष्यों के प्रथम पाँच लक्ष्यों को सम्मिलित करते हुए इन्हें प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका का गहन विश्लेषण किया गया है; जो कि इस प्रकार हैं–

**सतत् विकास लक्ष्य–1 : गरीबी मुक्त विश्व :** सामान्यतः गरीबी को एक आर्थिक परिघटना माना जाता है, लेकिन इसे आर्थिक परिघटना मानने के साथ ही सामाजिक परिघटना मानना अधिक तार्किक होगा। सामाजिक परिघटना होने के कारण व्यावसायिक समाज कार्य हस्तक्षेप की आवश्यकता इसके निदान एवं समाधान में महत्त्वपूर्ण हो जाता है। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता सुभेद्य जनसंख्या की पहचान करता है, उन्हें कल्याण योजनाओं से जोड़ता है, आजीविका कार्यक्रमों से जोड़ता है, हाशिये पर खड़ी जनसंख्या का सहयोग करता है और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से लोगों को जोड़ने में मदद करता है।

**सतत् विकास लक्ष्य–2 : भुखमरी समाप्त करना :** भुखमरी किसी भी समाज के लिए अभिशाप से कम नहीं होती है, क्योंकि यह व्यक्ति के जीवन एवं गरिमा से जुड़ा हुआ विषय है। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं द्वारा सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास जमीनी स्तर पर निरंतर किया जाता रहा है। इसलिए भुखमरी जैसी सामाजिक बुराई को दूर करने में व्यावसायिक समाज कार्य अभ्यासकर्ताओं की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता उन कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करता है, जो कि खाद्य सुरक्षा पर केन्द्रित हैं। पोषण के प्रति जागरूकता लाने, सुभेद्य परिवारों की पहचान करने एवं खाद्य सुरक्षा संबंधी योजनाओं तक सुभेद्य परिवारों की पहुँच सुनिश्चित करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता सहयोग करता है।

**सतत् विकास लक्ष्य–3 : अच्छा स्वास्थ्य एवं खुशहाली :** स्वास्थ्य क्षेत्र में रूपांतरकारी बदलाव लाने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का सृजन करता है, मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में सहयोग करता है, बीमारी से बचाने वाली स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देता है, मरीजों एवं उनके परिवारों के लोगों के साथ काम करता है, उनके तनाव को कम करने के लिए समस्याओं का

सामान्यीकरण करता है आदि। समाज कार्य व्यवसाय की एक विशेष विधा चिकित्सकीय एवं मनश्चिकित्सीय समाज कार्य स्वास्थ्य क्षेत्र में विशेषज्ञ सेवा प्रदान करता है।

**सतत् विकास लक्ष्य–4 : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा :** सतत् विकास लक्ष्यों की संकल्पना समावेशी शिक्षा के अभाव में नहीं की जा सकती है। इस संकल्पना को साकार करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा की पहुँच को सुलभ बनाने की आवश्यकता है। सभी वर्गों तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की विशिष्ट भूमिका है। वह जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा विद्यालयों में नामांकन की दर बढ़ाने का कार्य करता है, बच्चों के ड्रापऑउट के कारणों की पहचान करता है, शैक्षिक परामर्श देता है, अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूक करता है, शैक्षिक नीति–निर्माण में सहयोग करता है आदि। इस प्रकार से व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता समाज में सभी वर्गों तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने में सहयोग देता है।

**सतत् विकास लक्ष्य–5 : लैंगिक समानता :** भारत प्राचीन काल से पितृसत्तात्मक समाज का पोषक रहा है। जहाँ पर महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा निम्न सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त है। आधुनिक समाज में रूपांतरकारी परिवर्तन लाने के लिए लैंगिक समानता का पुरजोर समर्थन किया जा रहा है। इसके दृष्टिगत सतत् विकास लक्ष्यों में भी लैंगिक समानता को स्थान दिया गया। महिला सशक्तिकरण एवं विकास, समाज कार्य व्यवसाय का मुख्य क्षेत्र होने के कारण व्यावसायिक समाज कार्य अभ्यासकर्ताओं द्वारा निरंतर उनके लिए कार्य किया जाता रहा है। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका इस प्रकार से है– हिंसा से पीड़ित महिलाओं का सहयोग, विधिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, स्वयं सहायता समूहों का निर्माण, लैंगिक भेदभाव के प्रति जन–आंदोलन, महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता, महिलाओं के प्रति सामाजिक धारणा में परिवर्तन लाने के लिए जन–अभियान आदि।

## सतत् विकास लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक समाज कार्य व्यवसाय के मुख्य उपागम

**अधिकार आधारित उपागम :** यह उपागम सुनिश्चित करता है कि कल्याणकारी एवं विकास योजनाओं का लाभ लोगों तक बाधारहित अधिकारितापूर्वक पहुँचे, न कि दान के रूप में।

**सामुदायिक विकास उपागम :** व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता इस उपागम का प्रयोग करके समुदाय को उनकी समस्याओं की पहचान करने एवं उसके समाधान करने में सम्मिलित करता है। इस प्रकार से जन–भागीदारी द्वारा अधिक–से–अधिक लोगों को जोड़कर समस्याओं का निकारण करने का प्रयास किया जाता है।

**सशक्तिकरण उपागम :** इस उपागम के अंतर्गत लोगों को सशक्त करके निर्णय–निर्माण में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित किया जाता है।

उपर्युक्त उपागम सतत् विकास लक्ष्य को प्राप्त करने के उपयोगी हैं। समाज कार्य व्यवसाय के यह उपागम न्यायसंगत, समावेशी एवं मानवाधिकार को सुनिश्चित करके गरीबी, भुखमरी एवं भेदभाव आदि को न्यून करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

## सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के समक्ष चुनौतियां

इसमें कोई संदेह नहीं कि सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। फिर भी कुछ चुनौतियां विद्यमान हैं, जो व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं द्वारा सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधक हैं–

1- समाज कार्य व्यवसाय की पहचान का संकट।
2- वित्तीय संसाधनों की कमी।
3- सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता।
4- अपर्याप्त प्रशिक्षण।
5- प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी।

## सुझाव

सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिनका प्रयोग करके व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका को प्रभावी बनाया जा सकता है–

1- सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं को विशेष प्रशिक्षण देना।
2- गैर–सरकारी संगठनों को अधिक वित्तीय अनुदान प्रदान करना।
3- सेवाओं को प्रदान करने में तकनीकि का अधिकाधिक प्रयोग।
4- गैर–सरकारी संगठनों, विश्वविद्यालयों, सरकारी संस्थाओं एवं अन्य हितधारकों के साथ समन्वय स्थापित करना।
5- समाज कार्य व्यवसाय को एक व्यवसाय के रूप में पहचान दिलाना और इसकी सामाजिक स्वीकृति को बढ़ाना।
6- व्यावसायिक समाज कार्य अभ्यासकर्ताओं को नीति–निर्माण से जोड़ना।

## निष्कर्ष

सतत् विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए सामूहिक प्रयास, सामाजिक जिम्मेदारी और समावेशी विकास के तरीकों की जरूरत है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की विशेष भूमिका है, क्योंकि वे प्रत्यक्ष रूप से उन समुदायों के साथ काम करते हैं, जो गरीबी, भुखमरी, असमानता, भेदभाव आदि का सामना कर रहे हैं। मानवाधिकारों, सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय तथा समावेशी समाज के निर्माण के प्रति व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की पेशेवर प्रतिबद्धता उन्हें सतत् विकास लक्ष्यों को हासिल करने में जरूरी साझेदार बनाती है। सतत् विकास लक्ष्यों को केवल नीतियां बनाकर प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसके लिए जमीनी स्तर पर कार्य करके समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सामाजिक बदलाव लाने की आवश्यकता है। सतत् विकास लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त करने के लिए समाज कार्य शिक्षा, अभ्यास एवं प्रशिक्षण को मजबूत करना आवश्यक है, ताकि न्यायपूर्ण एवं समावेशी समाज का निर्माण किया जा सके।

## संदर्भ


- United Nations. (2015). Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development. United Nations.

- NITI Aayog. (2024). SDG India Index 2023–24. Government of India. New Delhi:
- NITI Aayog. (2020). Localization of Sustainable Development Goals: Early lessons from India. Government of India.
- International Federation of Social Workers. (2014). Global definition of social work. IFSW.
- Saini, S., & Singh, N. P. (2023). Role of social work in sustainable development: Towards eco-social practice. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(1).
- Kumar, A., & Singh, P. (2021). Social work interventions for sustainable community development in India.
- Desai, M. (2015). Community development and social work practice in India. Rawat Publications.



- डॉ0 यतीन्द्र मिश्र, **ymbu1504@gmail.com Mob. No.-9452347685**
- पवन कुमार, **artiofficialfeb29@gmail.com**